CONTENTS:

Sri Ganesha stotra Sri Mahalakshmi stotra Sri Saraswathi stotra Nivedana stotra Nagagraha smarane

Prarthane

Shivastuti

Gowri Japa

Indraakshi stotora

Bilwa stuti

Annapurneshwari stotra

Chandra astaavimshati naama stotra

Lingaastaka

Durgaadevi stotra

Vaasavi stotra

Sriraama smarane

Srikrishna vandana

Tulasi stuti

Budha panchavimshati naama stotra

Sri Raagavendra prarthana

Ashwattha vriksha vandana

Saaligrama stotra

Guru stotra

Sri Sharadaa stotra

Sri Mahalakshmi astaka stotra

Sri Veenkatesha stotra

Sriraamaastaka

Navagraha stotra

Suurya dhyaana

Surrya dwaadasha naamaavali

Shiva stotra

Gaayatrii mantra

Sri astalakshmi stotra

Ashtaadasha peetha shaktideevattaa stotra

Sri Veenkateesha stotraLi

Sri Raama rakshaa stotra

Sri hanumandashttottara shatanaamavaLi

Sri Naama Raamayana

Sri Hanumat sotram

Sri Hanuman Chaalisa

Sriraama MangaLaashasanam

श्री गणेश स्तोत्र [Sri Ganesha stotra] शुक्लाँबरधरँ विष्णुँ शशिवर्णं चतुर्भुजँ। प्रसन्नवदनँ ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशांतये।।

श्री महालक्ष्मी स्तोत्र [Sri Mahalakshmi stotra] लक्ष्मींक्षीरसमुद्रराजतनयाँ श्रीरँगधामेश्वरीं। दासीभूत समस्त देव वनिताँ लोकैक दीपाँकुराँ।। श्री मन्मंद कटाक्षलब्ध विभव ब्रह्मेंद्र गँगाधरां। त्वाँ त्रैलोक्य्स कुटुँबिनीं सरसिजाँ वँदे मुकुँदप्रियाँ।।

श्री सरस्वती स्तोत्र [Sri Saraswathi stotra] या कुँदेंदु तुषार हारधवळा या शुभ्र वस्त्रान्विता। या वीणा वरदँड मॅंडितकरा या श्वेत पद्मासना।। या ब्रह्माच्युत शॅंकर प्रभृतिभिः देवैस्सदा पूजिता। सा माँ पातु सरस्वती भगवती निश्श्येषजाङ्यापहा।।

निवेदना स्तोत्र [Nivedana stotra] त्वमेव माता च पिता त्वमेव। त्वमेव बँधुश्च सखा त्वमेव। त्वमेव विद्या द्रविणँ त्वमेव। त्वमेव सर्वं मम देवदेव।।

नवग्रह रमरणे [Navagraha Smarane] नमः सूर्याय चँद्राय मँगळाय बुधाय च। गुरु शुक्र शनिभ्यश्च राहवे केतवे नमः।।

प्रार्थने [Prarthane]
स्वित्त प्रजाभ्यः परिपालयँताँ न्यायेन मार्गेण महीं महीशाः।
गो ब्राह्मणेभ्याः शुभमस्तु नित्यँ लोकाः समस्ताः सुखिनो भवँतु।।
शिवस्तुति [Shivastuti]
वँदे शँभुमुमापितं सुरगुरुँ वँदे जगत्कारणँ।
वँदे पन्नगभूषणँ मृगधरँ वँदे पशूनाँपितं।।
वँदे सूर्यशशाँद विन्निनयनँ वँदे मुकुँदिप्रयाँ।
वँदे भक्तजनाश्रयँ द वरदँ वँदे शिवँ शँकरँ।।

गौरी जप [Gown Japa] ओं नमः शिवकाँतायै ह्रीं नमः शिवशक्त्यै। ओं नमो जगताँ वँदे ममभूयान्मनोरथः।।

इँद्राक्षी स्तोत्र [Indrakshi stotra] इँद्राक्षीं द्विभुजा देवीं वँदे पीतवस्त्रद्वयान्विताँ। वामहस्ते वज्रधराँ दक्षिणेन वरप्रदाँ।। इँद्राक्षीं युवतीं देवीं नानालँकार भूषिताम्। प्रसन्नवदनाँभोजामप्सरोगण सेविताँ।।

बिल्वस्तुति [Bilwa stuti]
त्रिदळॅ त्रिगुणाकारॅं त्रिनेत्रॅं च त्रियायुधँ।
त्रिजन्म पापसँहारॅं एकबिल्वॅं शिवार्पणँ।।

अञ्गपूर्णेश्वरी स्तोत्र [Annapumeshwari stotra] नित्यानँदकरी वराभयकरी सौंदर्यरत्नाकरी। निर्धूताखिल घोरपावनकरी प्रत्यक्षमाहेश्वरी।। प्रालेयाचलवँश पावनकरी काशीपुराधीश्वरी। भिक्षाँदेहि कृपावलँबनकरी माताञ्जपूर्णेश्वरी।।

चँद्र अष्टाविंशतिनाम स्तोत्र [Chandra astaavimshati naama stotra] अस्य श्री चँद्रस्याष्टाविंशतिनाम स्तोत्रस्य गौतमऋषिः। सोमो देवता। विराट्छँदः। चँद्र प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। चँद्रस्य शृणुनामानि शुभदानि महीपते। यानि श्रुत्वानरो दुःखान्मुच्यते नात्रसँशयः।। सुधाकरश्च सोमश्च ग्लौरब्जः कुमुदप्रियः। लोकप्रियः शुभ्रभानुश्चँद्रमा रोहिणीपतिः।।शशी हिमकरो राजा द्विजराजो निशाकरः। आत्रेय इँदुः शीताँशुरोषधीशः कलानिधिः।।चैवातृको रमाभ्रात्रा क्षिरोदार्णव सँभवः। नक्षत्र नायकः शँभु शिरश्चूडामणिर्विभुः।।तापहर्ता नभोदीपो नामान्येतानियः पठेत्। प्रत्यहँ भक्ति सँयुक्तस्तस्य पीडा विनश्यति।।तद्दिने च पठेद्यस्तु लभेत् सर्वं समिहितम्। ग्रहादीनाँ च सर्वेषाँ भवेच्वँद्रबलँ सदा।।

लिंगाष्टकँ [Lingaastaka] ब्रह्म मुरारि सुरार्चितलिंगम्। निर्मल भासित शोभितलिंगम्। जन्मजदुःख विनाशकलिंगम्। तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम्।।

देवमुनि प्रवरार्चितिलंगम्। कामदहन करुणाकरिलंगम्। रावणदर्प विनाशकिलंगम्। तत्प्रणमामि सदाशिविलंगम्।।

सर्वसुगँध सुलेपितलिंगम्। बुद्धि विवर्धन कारणलिंगम्। सिद्ध सुरासुर वँदितलिंगम्। तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम्।।

कनकमाहामणि भूषितलिंगम्। फणिपतिवेष्टित शोभितलिंगम्। दक्षसुयज्ञ विनाशनलिंगम्। तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम्।।

कुँकुम चँदन लेपित लिंगम्। पँकजहार सुशोभितलिंगम्। सँचितपाप विनाशनलिंगम्। तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम्।।

देवगणार्चित सेवितलिंगम्। भावैर्भक्तिभिरेवचलिंगम्। दिनकरकोति प्रभाकरलिंगम्। तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम्।।

अष्टदळोपरि वेष्टितलिंगम्। सर्वसमुद्भव कारणलिंगम्। अष्टदरिद्र विनाशनलिंगम्। तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम्।।

सुरगुरु सुरवर शोभितलिंगम्। सुरवन पुष्प सदार्चितलिंगम्। परमपदं परमात्मकलिंगम्। तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम्।। लिंगाष्टकमिदँ पुण्यँ यः पठेत् शिवसन्निधौ। शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सहमोदते।।

दुर्गादेवी स्तोत्र [Durgadevi stotra] नमस्ते शरण्ये शिवेसानुकॅंपे। नमस्ते जगद्व्यापिके विश्वरूपे।। नमस्ते जगद्वंद्य पापारविंदे। नमस्ते जगत्कारिणि त्राहि दुर्गे।।

वासवी स्तोत्र [Vasavi stotra] श्री देवीं नवयौवनाँचित तनुँ श्रेयःप्रदां कन्यकाँ। स्वर्णालँकृतभूषिताँधृतशुकाँ सौंदर्य वारान्निधिं।। कारुण्यामृतवर्षिणीं नवमणिभ्राजित्करीटोज्वलाँ। वैश्यखातकुलोद्भवाँ शृतिनुताँ वँदे सदा वासवीं।।

श्रीराम रमरणे [Srirama smarane] श्रीराघवँ दशरथात्मजप्रमेयँ सीतापतिं रघुकुलान्वय रत्नदीपं। अजानुबाहुँ अरविंददळायताक्षँ रामँ निशाचर विनाशकरँ नमामि।।

श्रीकृष्ण वँदना [Srikrishna vandana]
करारविंदेन पदारविंदँ मुखारविंदे विनिवेशयँतँ।
वटस्य पत्रस्य पुटे शयानँ बाल मुकुँदँ मनसा स्मरामि।।
वसुदेवसुतँ देवँ कँसदाणूर मर्धनँ।
देवकीपरमानँदँ कृष्णँ वँदे जगद्गुरूँ।।

तुळसी स्तुति [Tulasi Stuti] नमः तुळिस कल्याणि नमो विष्णुप्रिये शुभे। नमो मोक्षप्रदे देवि नमः सपत्प्रदायि।।

बुधपँचविंशति नामस्तोत्र [Budhapanchavimshati naama stotra] अस्य श्री बुधपँचविंशति नामस्तोत्रस्य प्रजापित ऋषिः त्रिष्टुप्छँदः बुधोदेवता बुधप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः। बुधो बुद्धिमताँ श्रेष्टो बुद्धिदाता धनप्रदः। प्रियँगुकलिकाश्यामः कँजनेत्रो मनोहरः। ग्रहोपमो रौहिणेयो नक्षत्रेशो दयाकरः।। विरुद्ध कार्यहँता च सौम्यो बुद्ध विवर्धनः। चंद्रात्मजो विष्णुरूपी ज्ञानी ज्ञो ज्ञानिनायकः। ग्रहपीडाहरो दार पुत्रधान्य पशुप्रदः। लोकप्रियः सौम्य मूर्तिर्गुणदो गुणिवत्सलः। पँचविंशति नामानि बुधस्यैतानि यः पठेत्। स्मृत्वा बुधँ सदा तस्यः

ग्रहपीड सर्वा विनश्यति। तदिने वा पठेद्यस्तु लभते स मनोगतम्।।

श्री राघवेंद्र प्रार्थना [Sri Raaghaendra prarthana] पूज्याय राघवेंद्राय सत्यधर्मरताय च । भजताँ कल्पवृक्षाय नमताँ कामधेनुवे । ।

अश्वत्थ वृक्ष वँदन [Ashwattha vriksha vandana] मूलतो ब्रह्मरूपाय मध्यतो विष्णुरूपिणे। अग्रतः शिवरूपाय वृक्षराजाय ते नमः।।

सालिग्राम स्तोत्र [Saaligraama stotra] सालिग्राम शिलावारि पापहारी विशेषतः। आजन्म कृत पापानाँ प्रायश्चित्तँ दिने दिने।।

गुरु स्तोत्र [Guru stotra]
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरु साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

श्री शारदा स्तोत्र [Sri Sharadaa stotra] सरस्वती नमस्तुभ्यँ वरदे कामरूपिणि। विद्यारँभँ करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा।। नमस्ते शारदादेवि काश्मीरपुरवासिनि। त्वामहँ प्रार्थये नित्यँ विद्यादानँ च देहिमे।।

श्री महालक्ष्म्यष्टक स्तोत्र [Sri Mahalakshmyastaka stotra] नमस्तेडस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते। शॅख़चक्र गदाहस्ते महालक्ष्मीनडमोस्तुते।। नमस्ते गरुडारूढे कोलासुर भयँकि। सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मीनडमोस्तुते।। सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्ट भयँकि। सर्वदुःखहरे देवि महालक्ष्मीनडमोस्तुते।। सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि महालक्ष्मीनडमोस्तुते।। संत्रुत्ते महादेवि महालक्ष्मीनडमोस्तुते।। आद्यँतरहिते देवि आद्य शक्ति महेश्वरि। योगज्ञे योगसंभूते महालक्ष्मीनडमोस्तुते।।

स्थूलसूक्ष्म महारौद्रए महाशक्ति महोदरे।
महापापहरे देवि महालक्ष्मीनिडमोस्तुते।।
पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्म स्वरूपिणि।
परमेशि जगन्मातः महालक्ष्मीनिडमोस्तुते।।
श्वेताँबरधरे देवि नानालँकारभूषिते।
जगत्स्थिते जगन्मातः महालक्ष्मीनिडमोस्तुते।।
महालक्ष्म्यष्टक स्तोत्रं यः पठेत्भक्तिमान्नरः।
सर्वसिद्धिममाप्नोति राज्यँ प्राप्नोति सर्वद।।
एककाले पठेन्नित्यँ महापाप विनाशँ।
द्विकाले यः पठेन्नित्यँ धनधान्य सक्मन्वितः।।
न्रिकाले यः पठेन्नित्यँ महाशत्रु विनाशनँ।
महालक्ष्मीभवेन्नित्यँ प्रसन्ना वरदा शुभा।।

श्री वेंकटेश स्तोत्र [Sri Veenkatesha stotra] कल्याणाद्भुत गात्राय कामितार्थ प्रदायिने। श्रीमद्वेंकटनाथाय श्रीनिवासाय ते नमः।।

श्रीरामाष्ट्रक [Sriraamaashtaka] भजे विशेष सुँदर समस्त पापखंडनम्। स्वभक्त चित्तरंजनं सदैव राममद्वयम्।। जटाकलापशोभितँ समस्त पापनाशकम्। रवभक्तभीतिभँजनँ भजेह राममद्वयम्।। निजरवरूप बोधकँ कृपाकरँ भवापहम्। समँशिवँ निरँजनम् भजेह राममद्वयम्।। सहप्रपँचकल्पितं ह्यनामरूप वास्तवम्। निराकृतिं निरामयँ भजेह राममद्वयम्।। निष्प्रपँच निर्विकल्प निर्मलँ निरामयम्। चिदेकरूप सँततँ भजेह राममद्वयम्।। भवाब्धिपोतरूपकं ह्यशेषदेहकल्पितम्। गुणाकरँ कुपाकरँ भजेह राममद्वयम।। महावाक्यबोधकैर्विराज मानवाक्पदै:। परब्रह्मव्यापकँ भजेह राममद्वयम्।। शिवप्रदं सुखप्रदं भवच्चिदं भ्रमापहम्। विराजमानदैशिकम् भजेह राममद्वयम्।। रामाष्टकँ पठति यः सूकरँ सुपृण्यँ व्यासेन भाषितमिदँ। शृणुते मनुष्यः श्रिविद्याँ श्रियँविपुलसौख्यमनँतकीर्ति। सँप्राप्यँ देहविलये लभते च मोक्षम्।।

नवग्रह स्तोत्र [Navagraha stotra] जपाकुसुमसँकाशँ काश्यपेयं महाद्युतिं। तमोरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोस्मि दिवाकरँ।। दधिशँख तुषाराभँ क्षीरोदार्णव सँभवँ। नमामि शशिनँ सोमँ शंभोर्मुकुट भूषणँ।। धरणीगर्भसँभूतँ विद्युत्काँति समप्रभं। कुमारं शक्तिहरतं तं मँगलं प्रणमाम्यहं।। प्रियँगु कलिकाश्यामँ रूपेणा प्रतिमँ बुधँ। सीम्यँ सीम्यगुणोपेतँ तँ बुधँ प्रणमाम्यहँ।। देवानां च ऋषिणां च गुरुं काचन सन्निभँ। बुद्धिभूतँ त्रिलोकेशँ तँ नमामि बृहस्पति।। हिमकुँद मृणालाभँ दैत्यानाँ परमँ गुरूँ। सर्वशास्त्र प्रवक्तारँ भार्गवँ प्रणमाम्यहँ।। नीलाँजन समाभासँ रविपुत्रं यमाग्रजँ। छाया मार्तांड सँभूतँ तँ नमामि शनैश्चरँ।। अर्धकायँ महावीर्यं चँद्रादित्य विमर्दन्। सिंहिकागर्भ सँभूतँ तँ राहुँ प्रणमाम्यहँ।। फलाश पुष्पसँकाशँ तारकाग्रहमस्तकँ। रौद्रँ रौद्रात्मकँ घोरँ तँ केत्ँ प्रणमाम्यहँ।। इति व्यासमुखोदगीतँ यः पठेत्सुसमाहितः। दिवावा य दिवा रात्रो विघ्नशांतिर्भविश्यति।। नरनारी नृपाणाँच भवेदुःस्वप्न नाशनँ। ऐश्वर्यमतुलँ तेषामारोग्यँ पुष्टिवर्धनँ।। ग्रहनक्षत्रजाः पीडास्तरकराग्नि समुद्भवाः। ताः सर्वाः प्रशमनं याँति व्यासोब्रूतेन सँशयः।।

सूर्य ध्यान [Suurya dhyaana] उदये ब्रह्मस्वरूपोsयँ मध्याह्नेतु महेश्वरः। अस्तमाने स्वयँ विष्णुः त्रियिमूर्ति दिवाकरः।।

सूर्य द्वादशनामावळि [Suurya dwaadashanaamaavali] ओं मित्राय नमः। ओं रवये नमः।ओं सूर्याय नमः। ओं भानवे नमः।ओं खगाय नमः। ओं पूष्णे नमः। ओं हिरण्यगर्भाय नमः। ओं मरीचये नमः। ओं आदित्याय नमः। ओं सवित्रे नमः। ओं अर्काय नमः। ओं भारकराय नमः। ओं श्री सवितृसूर्यनारायणाय नमः।।

शिव स्तोत्र [Shiva stotra] ज्योतिर्मात्र स्वरूपाय निर्मलज्ञान चक्षुषे। नमः शिवाय शाँताय ब्रह्मणे लिंगमूर्तये।।

गायत्री मँत्र [Gayatrii mantra] ओं भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यँ भर्गोदेवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

श्री अष्टलक्ष्मि स्तोत्र [Sri astalakshmi stotra] सुमनसवँदित सुँदरि माधवि चँद्रसहोदरि हेममये। मुनिगण मॅंडित मोक्षप्रदायिनि मॅंजुळ भाषिणि वेदनुते।। पँकज वासिनि देवसुपूजित सद्गुणवर्शिणि शाँतियुते। जय जय हे मधुसुदनकामिनि आदिलक्ष्मी सदा पालयमाँ।। अयिकलिकल्मषनाशिनि कामिनि वैदिकरूपिणि वेदमये। क्षीर समृद्भव मँगळरूपिणि मँत्र निवासिनि मँत्रन्ते।। मँगळदायिनि अँबुजवासिनि देवगणाश्रित पादयुते। जय जय हे मधुसूदनकामिनि धान्यलक्ष्मी सदा पालयमाँ।। जयवरवर्णिनि वैष्णवि भागीव मंत्र स्वरूपिणि मॅत्रमये। सूरगण पूजित शीघ्रफलप्रद ज्ञानविकासिनि शास्त्रन्ते।। भवभयहारिणि पाप विमोचनि साधु जनाश्रित पादयूते जय जय हे मधुसूदनकामिनि धेर्यलक्ष्मी सदा पालयमाँ।। जयजय दुर्गति नाशिनि कामिनि सर्वफलप्रद शास्त्रमये। रथगजसुरगपदाति समावृत परिजन मॅंडित लोकसुते।। हरिहर ब्रह्मसुपूजित सेवित तापनिवारिणि पादयुते। जय जय हे मधुसूदनकामिनि गजलक्ष्मीरूपेण सदा पालयमाँ।। अयिखगवाहिनि मोहिनि चक्रिणि रागविवर्धिनि ज्ञानमये। गुणगण वारिधि लोकहितैषिणि स्वरसप्त भूषित गानन्ते।। सकल सुरासुरु देव मुनीश्वर मानव वँदित पादयुते। जय जय हे मधुसूदनकामिनि सँतानलक्ष्मी सदा पालयमाँ।। जयजय कमलासनि सद्गुणदायिनि ज्ञान विकासिनि ज्ञानमये। अनुदिनमर्चित कुँकुमधूसर भूषित वासित वाद्यनुते।। कनकधारास्तृति वैभव वँदित शॅंकर देशिक मान्यपदे।

जय जय हे मधुसूदनकामिनि विजयलक्ष्मी सदा पालयमाँ।।
प्रणत सुरेश्वरि भारति भार्गवि शोकविनाशिनि रत्नमये।
मणिमय भूषित कर्णविभूषण शाँति समावृत हास्यमुखे।।
नवनिधि दायिनि कलिमलहारिणि कामित फलप्रद हस्तयुते।
जय जय हे मधुसूदनकामिनि विद्यालक्ष्मी सदा पालयमाँ।।
धिमि धिमि धिंदिमि धिंदिमि धिंदिमि दुँदुभि नाद सँपूर्णमये।
घम घम घुंघुम घुंघुम घुंघुम शँखनिनाद सुवाद्यनुते।।
वेद पुराणेतिहास सुपूजित वैदिकमार्ग प्रदर्शयुते।
जय जय हे मधुसूदनकामिनि धनलक्ष्मीरूपेण सदा पालयमाँ।।

अष्टादश पीठ शक्तिदेवता स्तोत्र [Astaadasha peetha shaktideevataa stotra] लॅकायाँ शाँकरी देवी कामाक्षीकाँचिपुरे। पर्जन्ये सिंहलादेवी चामुँडी क्राँचद्वीपके।। अहिक्षेत्रे कामरूपी पैठणे पीठिकापुरी। वड्याणे गिरिजादेवि माणिक्या चित्रकूटके।। माहुर्यामेकवीरा च प्रयागे माधवी तथा। जालँधरे विष्णुदेवीकाश्याँ मँगळागौरिका।। कुरुक्षेत्रे महामाया उज्जयिन्याँतु कालिका। सँनत्याँ चँदालादेवी दरवीरे तु लक्ष्मिका।। अलपुर्यां जोगुळाँबा श्रीशेलेभ्रमराँबिका। इत्यष्टादश पीठेषु शक्तयश्च मुनिश्रुतेः।। श्रवणात्पठनात्पापँ सर्वापद्रवनाशम्। सर्वसौभाग्यदँ नृणाँ सर्वकाम फलप्रदम्।। अष्टादश महापीठ ऋषिभिर्निर्मिता पुरा। त्रिसँध्यँ यः पठेन्नीत्यँ सर्व कामार्थ सिद्धिदम्।।

श्री वेंकटेश स्तोत्र [Sri Veenkateesha stotra] कमलाकुचचूचुककुँकुमतो नियतारुणितातुलनीलतनो। कमलायतलोचन लोकपते विजयिभव वेंकटशैलपते।। स चतुर्मुखषण्मुख पँचमुख प्रमुखाखिल दैवतमौळिमणे। शरणागतवत्सल शौर्यनिधे परिपालय माँ वृषशैलपते।। अतिवेलतया तव दुर्विषहैरनुवेलकृतैरपराधशतैः। भिरतँ त्वरितँ वृषशैलपते परया कृपया परिपाहि हरे।। अधि वेंकटशैल मुदारमतेर्जनताभिमताधिकदानरतात्। परदेवतया गदितान्निगमैः कमलादयितान्न पर कलये।।

कल वेणुरवावशगोपवधूशतकोटिवृतात् रमरकोटिसमात्।
प्रतिवल्लिवकाभिमतात् सुखदात् वसुदेवसुतान्न परँ कलये।।
अभिराम गुणाकर दाशरथे जगदेक धनुर्धर धीरमते।
रघुनायक राम रमेश विभो वरदो भव देव दयाजलधे।।
अवनीतनया कमनीयकरं रजनीकरचारुमुखाँबुरुहम्।
रजनीचर राज तमो मिहिरँ महनीय महँ रघुराममये।।
सुमुखं सुह्रदँ सुलभँ सुखदँ स्वनुजँ च सुकायममोघशरम्।
अपहाय रघूद्वहमन्यमहँ न कथँचन कँचन जातु भजे।।
विना वेंकटेशँ न नाथो न नाथः सदा वेंकटेशँ रमरामि रमरामि।
हरे वेंकटेश प्रसीद प्रसीद प्रियँ वेंकटेशँ प्रयच्छ प्रयच्छ।।
अहँ दूरतस्ते पदाँभोजयुग्म प्रणमेच्छयाङगत्य सेवाँ करोमि।
सकृत्सेवया नित्यसेवाफलँ त्वं प्रयच्छ प्रयच्छ प्रभो वेंकटेश।।
अज्ञानिना मया दोषानशेषान् विहितान् हरे।
क्षमस्व त्वँ क्षमस्व त्वँ शेषशेल शिखामणे।।

कुबेर अष्टोत्तर शतनामावळि [Kubeera asttoottara shatanaamaavali]

ओं कुबेराय नमः। ओं धनदाय नमः। ओं श्रीमते नमः।ओं यक्षेशाय नमः। ओं कुह्यकेश्वराय नमः। ओं निधीशाय नमः। ओं शॅंकर सखाय नमः। ओं महालक्ष्मीनिवास भुवये नमः। ओं महापद्म निधीशाय नमः। ओं पूर्णाय नमः। ओं पद्मदीश्वनिराय नमः। ओं शंखाख्य निधिनाथाय नमः। ओं मकराख्य निधिप्रियाय नमः। ओं सुखि सँस्व निधिनायकाय नमः। ओं मुकुँद निधिनायकाय नमः। ओं कुँदाक्य निधिनाथाय नमः। ओं नीलनित्याधिपाय नमः। ओं महते नमः। ओं वरनित्याधिपाय नमः। ओं पूज्याय नमः। ओं लक्ष्मीसाम्राज्यदायकाय नमः। ओं इलपिलापतये नमः। ओं कोशाधीशाय नमः। ओं कुलोचिताय नमः। ओं अश्वरूपाय नमः। ओं विश्ववँद्याय नमः। ओं विशेषज्ञानाय नमः। ओं विशारदाय नमः। ओं नळकूबरनाथाय नमः। ओं मणिग्रीविपत्रे नमः। ओं गूढमँत्राय नमः। ओं वैश्रवणाय नमः। ओं चित्रलेखा प्रियाय नमः। ओं एकपिंकाय नमः। ओं अलकधीशाय नमः। ओं पौलस्त्याय नमः। ओं नरवाहनाय नमः। ओं कैलासशैलनिलयाय नमः। ओं राज्यदाय नमः। ओं रावणाग्रजाय नमः। ओं चित्र चैत्ररथाय नमः। ओं उद्यान विहाराय नमः। ओं विहार सुकुतूहलाय नमः। ओं महोत्सहाय नमः। ओं महाप्राज्ञाय नमः। ओं सार्वभौमाय नमः। ओं अँगनाथाय नमः। ओं सोमाय नमः। ओं सौम्यदिगीश्वराय नमः। ओं पुण्यात्मने नमः। ओं पुरूहतश्रीयै नमः। ओं सर्व पुण्य जनेश्वराय नमः। ओं नित्यकीर्तये नमः। ओं लँकाहाक्तन नायकाय नमः। ओं यक्षाय नमः। ओं परमशाँतात्मने नमः। ओं यक्षराजे नमः। ओं यक्षिणीवृताय नमः। ओं किन्नरेश्वराय नमः। ओं किंपुरुषनाथाय नमः। ओं खड्गयुताय नमः। ओं विशने नमः। ओं ईशानदक्षपार्श्वस्थाय नमः। ओं वायुनाम समाश्रयाय नमः। ओं धर्ममार्गेक निराशाय नमः। ओं धर्मसँमुख सँस्थिताय नमः। ओं नित्येश्वराय नमः। ओं धनाध्यक्षाय नमः। ओं अष्टलक्ष्म्याश्रितालयाय नमः। ओं मनुष्य

धर्मण्ये नमः। ओं सकृत्ताय नमः। ओं कोशलक्ष्मीसमाश्रिताय नमः। ओं धनलक्ष्मी नित्यवासाय नमः। ओं धान्यलक्ष्मी नित्यवासाय नमः। ओं अश्वलक्ष्मी सदावासाय नमः। ओं गजलक्ष्मीस्थिरालयाय नमः। ओं राज्यलक्ष्मी जन्मगेहाय नमः। ओं धेर्यलक्ष्मी कृपाश्रयाय नमः। ओं अखडेश्वर्य सँयुक्ताय नमः। ओं नित्यानँदाय नमः। ओं सुखाश्रयाय नमः। ओं नित्य तृप्ताय नमः। ओं निधितारे नमः। ओं निराशाय नमः। ओं निरुपद्रवाय नमः। ओं नित्यकामाय नमः। ओं निराकांक्षाय नमः। ओं निरुपाधिकवासभुवये नमः। ओं शांताय नमः। ओं सर्वगुणोपेताय नमः। ओं सर्वज्ञाय नमः। ओं सर्वसँहिताय नमः। ओं शर्वाणी करुणापात्राय नमः। ओं शतानत कृपालयाय नमः। ओं गँधर्वकुल सँसेव्याय नमः। ओं सौगँधिका कुसुमप्रियाय नमः। ओं सुवर्णनगरीवासाय नमः। ओं निधिपीठ समाश्रिताय नमः। ओं महामेरुत्तरस्ताये नमः। ओं महर्षिगणसँस्तुताय नमः। ओं शूर्पणका ज्येष्ठाय नमः। ओं शिवपूजारताय नमः। ओं अनघाय नमः। ओं राजयोग समायुक्ताय नमः। ओं राजशेखरपुज्याय नमः। ओं कुबेराय नमः।।

श्री राम रक्षा स्तोत्र [Sri Raama rakshaa stotra] चरितँ रघुनाथस्य शतकोटि प्रविस्तरम्। एकैक मक्षरें पुँसाँ महापातक नाशनम्।। ध्यात्वा नीलोत्वल श्याम रामँ राजीवलोचनम। जानकी लक्ष्मणोपेतँ जटामकृट मॅंडितम।। साsसितूण धनुर्बाण पाणि नक्तँ चराँतकम्। स्वलीलया जगत्रातु मूविर्भूत मजँ विभुम्।। रामरक्षां पठेत् प्राज्ञः पापिनं सर्वकामदाम्। शिरो मे राघवः पातु फालँ दशरथात्मजः।। कौसल्येयो दृशोपातु विश्वामित्रः प्रियः श्रुति। घ्राणँ पात् मुखत्राता मुखँ सौमित्रि वत्सलः।। जिह्वाँ विद्या निधिः पातु कँठँ भरत वँदितः। रकँधौ दिव्यायुधः पातु भुजौ भग्नेश कार्मुकः।। करौ सीतापतिः पातु हृदयँ जामदग्न्यजित्। मध्यँ पातु खरध्वँसी नाभिं जाँबवदाश्रयः।। सुग्रीवेशः कटी पातु सक्थिनी हनुमत्प्रभुः। ऊरू रघूत्तमः पातु रक्षः कुल विनाशकृत्।। जानुनी सेतुकृत्पातु जँघे दशमुखाँतकः। पादौ विभीषण श्रिदः पातु रामोsखिलँ वपुः।। एताँ रामबलोपेताँ रक्षाँ यः सुकृती पठेत्। स चिरायुः सूखी पुत्री विजया विनया भवेत्।। पाताळ भूतल व्योम चारिण श्छद्मचारिणः। स द्रष्ट्र मपि सक्तारते रक्षितम् रामनामभिः।।

रामेति रामभद्रेति रामचँद्रेति वा रमरन्। नरो न लिप्यते पापैर्भुक्तिं मुक्तिं च विंदति।। जगज्जैत्रैक मँत्रेण रामनाम्नाs भिरक्षितम्। यः कँठे धारयेत्तस्य करस्थाः सर्व सिद्धयः वज्रपँजर नामेदँ यो रामकवचँ सँरेत। अव्याहताज्ञः सर्वत्र लभते जयमँगळँ।। आदिष्टवान यथा स्वप्ने रामरक्षा मिमाँ हरः। तथा लिखितवान् प्रातः प्रबुद्दो बुधकौशिकः।। आरामः कल्पवृक्षाणाँ विरामः सकलापदाम्। अभिरामस्त्रिलोकानाम् रामः श्री मान्सनः प्रभुः।। तरुणौ रूपसँपन्नौ सुकुमारौ महाबलौ। पुँडरीक विशालाक्षो चीरकृष्णाजिनाँबरो।। फलमूलाशिनौ दाँतौ तापसा ब्रह्मचारिणौ। पुत्रौ दशरथ स्त्येतौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ।। शरण्यौ सर्वसत्वानाँ श्रेष्ठा सर्वधनुष्मताम्। रक्षःकुल निहँतारौ त्रायेताँ नो रघोत्तमौ।। आत्तराज्यधनुषाविषुरपृशावक्षयाशृग निषँगराँगिनौ। रक्षणाय मम रामलक्ष्मणावग्रतः पथि सदैव गच्छताम्।। सन्नद्धः कवची खड्गी बापबाणधरो युवा। गच्छन् मनोरथान्नश्च रामः पात् स लक्ष्मणः।। रामो दाशरथिश्शूरो लक्ष्मणानुचरो बली। काकुत्थ्स पुरुषः पूर्णः कौशल्येयो रघूत्तमः।। वेदाँतवेद्यो यज्ञेशः पुराण पुरुषोत्तमः। जानकीवल्लभ श्रीमानप्रमेय पराक्रमः।। इत्येतानि जपेन्नित्यँ मद्भक्तः श्रद्धयान्वितः। अश्वमेधाधिकं पुण्यं सँप्राप्नोति न सँशयः।। रामँ दूर्वादळश्यामँ पद्माक्षँ पीतावासनम्। स्तुवँति नामभिर्धिवत्थैर्नते सँसारिणो नराः।। रामँ लक्ष्मणपूर्वजँ रघुवरँ सीतापतिं सुँदरम्। काकुत्थ्सँ करुणार्प्वं गुणनिधिं विप्रप्रियँ धार्मिकम्।। राजेंद्र सत्यसँधँ दशरथतनयँ श्यामलम् शाँतमूर्तिम्। वँदे लोकाभिरामँ रघुकुलतिलकँ राघवं रावणारिम्।। रामाय रामभद्राय रामचँद्राय वेधसे। रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः।। श्री राम राम रघुनँदन रामराम।

श्री राम राम भरताग्रज रामराम।। श्री राम राम रणकर्कश रामराम। श्री राम राम शरणँ भव रामराम।। श्री रामचँद्र चरणौ मनसा रमरामि। श्री रामचँद्र चरणौ वचसा गृणामि।। श्री रामचँद्र चरणो शिरसा नमामि। श्री रामचँद्र चरणौ शरणँ प्रपद्ये।। माता रामो वत्पिता रामचँद्र:। रवामी रामो मत्सखा रामचँद्र:।। सर्वस्वँ मे रामचँद्रो दयाळुः। र्न्नान्यं जाने नैव जाने न जाने।। दक्षिणे लक्ष्मणो वामे च जनकात्मजा। पुरतो मारुतिर्यस्य तँ वँदे रघुनँदनम्।। लोकाभिरामँ रणरँगधीरँ। राजीवनेत्रँ रघुवँशनाथम्।। कारुण्यरूपँ करुणाकरँ तँ। श्रीरामचँद्रँ शरणँ प्रपद्ये।। मनोजवँ मारुततुल्य वेगम्। जितेंद्रियँ बुद्धिमताँ वरिष्टँ।। वातात्मजँ वानर यूथमुख्यं। श्रीरामदूतँ शरणँ प्रपद्ये।। कुजँतँ राम रामेति मधुरँ मधुराक्षरम्। आरुह्य कविताशाखाँ वँदे वाल्मीकि कोकिलँ।। आपदा मपहर्तारँ दातारँ सर्वसँपदाम्। लोकाभिरामँ श्रीरामँ भूयो भूयो नमाम्यहम्।। भर्जनँ भवबीजाना मर्जनँ सुखसँपदाम्। तर्जनँ यमदूतानाँ रामरामेति गर्जनम्।। रामो राजमणिरसदा विजयते रामँ रमेशँ भजे। रामेणाsभिहता निशाचर चम् रामाय तस्मै नमः।। रामान्नाडस्ति परायणं परतरं रामस्य दासोडस्म्यहँ। रामे चित्तलय रसदा भवतुमे भो राम मामुद्धर।। श्रीराम राम रामेति रमे रमे रामे मनोरमे। सहस्रनाम तत्तृल्यँ रामनाम वरानने।।

श्री हनुमद्ष्टोत्तर शतनामावळि

SHRI HANUMADASHTTOTTARA SHATANAAMAAVALI

- १ ओं आजनेयाय नमः
- २. ओं महावीराय नमः
- ३. ओं हनुमते नमः
- ४. ओं मारुतात्मजाय नमः
- ५. ओं तत्वज्ञानप्रदाय नमः
- ६. ओं सीतादेवी मुद्राप्रदायकाय नमः
- ७. ओं अशोकवनिकाच्छेत्रे नमः
- ८. ओं सर्वमाया विभँजनाय नमः
- ९. ओं सर्वबँध विमोक्त्रे नमः
- १०. ओं रक्षोविध्वँसकारकाय नमः
- ११. ओं परविद्या परीहाराय नमः
- १२. ओं परशौर्यविनाशनाय नमः
- १३. ओं परमँत्रनिराकर्त्रे नमः
- १४. ओं परयँत्र प्रभेदकाय नमः
- १५. ओं सर्वग्रहविनाशिने नमः
- १६. ओं भीमसेनसहायकृते नमः
- १७. ओं सर्वदुःखहराय नमः
- १८. ओं सर्वलोकाचारिणे नमः
- १९. ओं मनोजवाय नमः
- २०. ओं पारिजात ध्रुमूलस्थाय नमः
- २१. ओं सर्वमँत्र स्वरूपवते नमः
- २२. ओं सर्वतँत्र स्वरूपिणे नमः
- २३. ओं सर्वयँत्रात्मकाय नमः
- २४. ओं कपीश्वराय नमः
- २५. ओं महाकायाय नमः
- २६. ओं सर्वरोगहराय नमः
- २७. ओं प्रभवे नमः

- २८. ओं बलसिद्धिकराय नमः
- २९. ओं सर्वविद्यासँपत्प्रदायकाय नमः
- ३०. ओं कपिसेनानायकाय नमः
- ३१. ओं भविष्यच्चतुराननाय नमः
- ३२. ओं कुमारब्रह्मचारिणे नमः
- ३३. ओं रत्नकुँडलदीप्तिमते नमः
- ३४. ओं सँचलद्वाल सन्नद्धलँबमान शिखोज्वालाय नमः
- ३५. ओं गॅंधर्वविद्यातत्वज्ञाय नमः
- ३६. ओं महाबलपराक्रमाय नमः
- ३७. ओं कारागृहविमोक्त्रे नमः
- ३८. ओं श्रृंखलाबॅंधमोचकाय नमः
- ३९. ओं सागरोत्तारकाय नमः
- ४०. ओं प्राज्ञाय नमः
- ४१. ओं रामदूताय नमः
- ४२. ओं प्रतापवते नमः
- ४३. ओं वानराय नमः
- ४४. ओं केसरिसुताय नमः
- ४५. ओं सीताशोक निवारणाय नमः
- ४६. ओं अँजनागर्भसँभूताय नमः
- ४७. ओं बालार्कसद्वशाननाय नमः
- ४८. ओं विभीषणप्रियकराय नमः
- ४९. ओं दशग्रीवकुलाँतकाय नमः
- ५०. ओं लक्ष्मणप्राणदात्रे नमः
- ५१. ओं वज्राकायाय नमः
- ५२. ओं महाद्युतये नमः
- ५३. ओं चिरॅंजीविने नमः
- ५४. ओं रामभक्ताय नमः
- ५५. ओं दैत्यकार्यविघातकाय नमः
- ५६. ओं अक्षहंत्रे नमः

- ५७. ओं काँचानाभाय नमः
- ५८. ओं पँचवक्त्राय नमः
- ५९. ओं महातपसे नमः
- ६०. ओं लॅंकिणीभॅजनाय नमः
- ६१. ओं श्रीमते नमः
- ६२. ओं सिंहिकाप्राणभँजनाय नमः
- ६३. ओं गॅंधमादनशैलस्थाय नमः
- ६४. ओं लॅंकापुरविदाहकाय नमः
- ६५. ओं सुग्रीवसचिवाय नमः
- ६६. ओं धीराय नमः
- ६७. ओं शूराय नमः
- ६८. ओं दैत्यकुलॉतकाय नमः
- ६९. ओं सुरार्चिताय नमः
- ७०. ओं महातेजसे नमः
- ७१. ओं रामचूडामणिप्रदायकाय नमः
- ७२. ओं कामरूपिणे नमः
- ७३. ओं पिंगळाक्षाय नमः
- ७४. ओं वर्धिमैनाकपूजिताय नमः
- ७५. ओं कबळीकृतमार्तांड मॅंडलायनमः
- ७६. ओं विजितेंद्रियाय नमः
- ७७. ओं रामसुग्रीवसँधात्रे नमः
- ७८. ओं महारावणमर्धनाय नमः
- ७९. ओं स्फटिकाभाय नमः
- ८०. ओं वागधीशाय नमः
- ८१. ओं नवव्याकृतिपँडिताय नमः
- ८२. ओं चतुर्बाहवे नमः
- ८३. ओं दीनबँधवे नमः
- ८४. ओं महात्मने नमः
- ८५. ओं भक्तवत्सलाय नमः

- ८६. ओं सँजीवननगाहर्त्रे नमः
- ८७. ओं शुचये नमः
- ८८. ओं वाग्मिने नमः
- ८९. ओं दृढव्रताय नमः
- ९०. ओं कालनेमिप्रमथनाय नमः
- ९१. ओं हरिमर्कटमर्कटाय नमः
- ९२. ओं दाँताय नमः
- ९३. ओं शॉताय नमः
- ९४. ओं प्रसन्नात्मने नमः
- ९५. ओं शतकँठामदापहृते नमः
- ९६. ओं योगिने नमः
- ९७. ओं रामकथालोलाय नमः
- ९८. ओं सीतान्वेषणपॅंडिताय नमः
- ९९. ओं वज्रदँष्ट्राय नमः
- १००. ओं वज्रनखाय नमः
- १०१. ओं रुद्रवीर्य समुद्भवाय नमः
- १०२. ओं इँद्रजित्प्रहितामोघ ब्रह्मास्त्रविनिवारकाय नमः
- १०३. ओं पार्थध्वजाग्रसँवासिने नमः
- १०४. ओं शरपँजरभेदकाय नमः
- १०५. ओं दशबाहवे नमः
- १०६. ओं लोकपूज्याय नमः
- १०७. ओं जाँबवत्प्रीतिवर्धनाय नमः
- १०८. ओं सीतासमेत श्रीरामपादसेवा धुरँधराय नमः
- इति श्री हनुमदष्टोत्तर शतनामवळि सँपूर्णं

श्रीनामरामायणं shri naama raamayana

ओं श्रीसीतालक्ष्मण भरतशत्रुघ्न हनुमत्समेत श्रीरामचँद्रपरब्रह्मणे नमः

बालकाँडँ

- १. शुद्धब्रह्म परात्पर राम
- २. कालात्मक परमेश्वर राम
- ३. शेषतल्प सुखनिद्रित राम
- ४. ब्रह्माद्यमर प्रार्थित राम
- ५. चँडिकरण कुलमँडन राम
- ६. श्रीमद्दशस्थ नँदन राम
- ७. कौसल्या सुखवर्धन राम
- ८. विश्वामित्र प्रियधन राम
- ९. घोरताटकाघातक राम
- १०. मारीचादि निपातक राम
- ११. कौशिक मखसँरक्षक राम
- १२. श्रीमदहल्योद्धारक राम
- १३. गौतममुनि सँपूजित राम
- १४. सुरमुनिवरगण सँस्तुत राम
- १५. नाविकधावित मृदुपद राम
- १६. मिथिलापुरजन मोदक राम
- १७. विदेहमानसरँजक राम
- १८. र्त्रांबक कार्मुक भँजक राम
- १९. सीतार्पित वरमालिक राम
- २०. कृतवैवाहिक कौतुक राम
- २१. भार्गवदर्पविनाशक राम
- २२. श्रीमदयोध्यापालक राम

राम राम जय राजा राम; राम राम जय सीता राम अयोध्याकाँडँ

- २३. अगणित गुणगण भूषित राम
- २४. आवनीतनया कामित राम
- २५. राकाचँद्र समानन राम

- २६. पितृवाक्याश्रित कानन राम
- २७. प्रियगृहविनिवेदित पद राम
- २८.तत्क्षालित निजमृदुपद राम
- २९. भरद्वाजमुखानँदक राम
- ३०. चित्रकूटाद्रि निकेतन राम
- ३१. दशरथ सँतत चिंतित राम
- ३२.कैकेयी तनयार्थित राम
- ३३. विरचित निजपितृकर्मक राम
- ३४. भरतार्पित निजपादुक राम

राम राम जय राजा राम; राम राम जय सीता राम अरण्यकाँडँ

- ३५. दँडकावनजन पावन राम
- ३६. दुष्टविराधविनाशन राम
- ३७. शरभँग सुतीक्ष्णार्चित राम
- ३८. अगस्त्यानुग्रह वर्धित राम
- ३९. गृध्राधिपसँसेवित राम
- ४०. पँचवटीतसुस्थित राम
- ४१. शूर्पणखार्ति विधायक राम
- ४२. खरदूषणमुख सूदक राम
- ४३. सीताप्रियहरिणानुग राम
- ४४. मारीचार्तिकृदाशुग राम
- ४५. विनष्टसीतान्वेषक राम
- ४६. गृध्राधिपगतिदायक राम
- ४७. शबरीदत्त फलाशन राम
- ४८. कबँधबाहुच्छेदन राम

राम राम जय राजा राम; राम राम जय सीता राम किष्किंधाकाँडँ

- ४९. हनुमत्सेवित निजपद राम
- ५०. नतसुग्रीवाभीष्टद राम
- ५१. गर्वित वालिसँहारक राम
- ५२. वानरदूतप्रेषक राम

५३. हितकर लक्ष्मण सँयुत राम राम राम जय राजा राम; राम राम जय सीता राम सुँदरकाँडँ

- ५४. कपिवरसँतत संस्मृत राम
- ५५. तद्गतिघ्नध्वँसक राम
- ५६. सीताप्राणाधारक राम
- ५७. दुष्टदशाननदूषित राम
- ५८. शिष्टहनूमद्भूषित राम
- ५९. सीतावेदित काकावन राम
- ६०. कृतचूडामणिदर्शन राम
- ६१. कपिवरवचनाश्वासित राम

राम राम जय राजा राम; राम राम जय सीता राम युद्धकाँडँ

- ६२. रावणनिधनप्रस्थित राम
- ६३. वानरसैन्यसमावृत राम
- ६४. शोषितसरिदीशार्थित राम
- ६५. विभीषणाभयदायक राम
- ६६. पर्वतसेतुनिबँधक राम
- ६७. कुँभकर्णशिरश्छेदक राम
- ६८. राक्षससँघ विमर्दक राम
- ६९. अहिमहिरावणचारण राम
- ७०. सँहत दशमुख रावण राम
- ७१. विधिभवमुखसुरसँस्तुत राम
- ७२. खस्थितचशरथवीक्षित राम
- ७३. सीतादर्शन मोदित राम
- ७४. अभिषिक्तविभीषणनत राम
- ७५. पुष्पकयानारोहण राम
- ७६. भरद्वाजादिनिषेवण राम
- ७७. भरतप्राणप्रियकर राम
- ७८. साकेतपुरीभूषण राम
- ७९. सकलस्वीयसमानत राम

- ८०. रत्नलसत्पीठास्थित राम
- ८१. पट्टाभिषेकालँकृत राम
- ८२. पार्थिवकुलसम्मानित राम
- ८३. विभीषणार्पितरँगक राम
- ८४. कीशकुलानुग्रहकर राम
- ८५. सकलजीवसँरक्षक राम
- ८६. समस्तलोकोधारक राम

राम राम जय राजा राम; राम राम जय सीता राम उत्तरकाँडँ

- ८७. आगतमुनिगण सँस्तुत राम
- ८८. विश्रुतचशकँठोद्भव राम
- ८९. सीतालिंगन निर्वृत राम
- ९०. नीतिसुरक्षित जनपद राम
- ९१. विपिनत्याजित जनकज राम
- ९२. करित लवणासुरवध राम
- ९३. स्वर्गत शॅंबुकसँस्तुत राम
- ९४. स्वतनय कुशलव नँदित राम
- ९५. अश्वमेधक्रतु दीक्षित राम
- ९६. कालावेदित सुरपद राम
- ९७. अयोध्यकजन मुक्तिद राम
- ९८. विधिमुख विबुधानँदक राम
- ९९. तेजोमय निजरूपक राम
- १००. सँसृति बँध विमोचक राम
- १०२. भक्तिपरायण मुक्तिद राम
- १०३. सर्वचराचरपालक राम
- १०४. सर्वभवामयवारक राम
- १०५. वैकुँठालय सँस्थित राम
- १०६. नित्यानँद पदस्थित राम
- १०७.राम राम जय राजा राम
- १०८. राम राम जय सीता राम

श्री हनुमत् स्तोत्रँ SHRI НАNUMAT STOTRAM

गोष्पदीकृतवाराशिं मशकीकृतराक्षसम् रामायण महामालारत्नं वँदे नीलात्मज्...१ अँजनानँदनँ वीरँ जानकी शोकनाशनम् कपीशमक्षहँतारँ वँदे लँका भयँकम् ...२ महाव्याकरणाँबोधि मन्तमानसमन्धरम् कवयन्तँ रामकीर्त्या हनुमन्तमुपारमहे...३ ऊल्लॅघ्य सिंधोः सलिलॅं सलीलॅं; यः शोकवह्निं जनकात्मजायाः आदाय तेनैव ददाह लँकाँ; नमामि तँ प्राँजलिराँजनेयँ...४ मनोजवँ मारुततुल्यवेगँ; जितेद्रियँ बुद्धिमताँ वरिष्ठम् वातात्मजं वानरयूथ मुख्यं; श्रीरामदूतं शिरसा नमामि...५ ऑजनेयमतिपाटलाननँ; काँचनाद्रि कमनीय विग्रहम् पारिजात तरुमूलवासिनँ; भावयामि पवमाननँदम्...६ यत्र यत्र रघुनाथ कीर्तनँ; तत्र तत्र कृतमस्तकाँजलिम् भाष्पवारिपरिपूर्णलोचनँ; मारुतिं नमत राक्षसाँतकम्...७ बुद्धिर्बलँ यशोधेर्यं; निर्भयत्त्वमारोगता अजाड्यं वक्पटुत्वं च; हनूमत्स्मरणाद्भवेत्...८

श्री गोस्वामि तुळसीदास विरचित श्री हनुमान् चालीसा SHRI HANUMAN CHAALISA

श्री गुरु चरण सरोज रज निज मनु मुकुर सुधारि बरनवु रघुवर विमल यश जो दायक फल चारि बुद्धिहीन तनु जानि के सुमिरो पवन कुमार बल बुद्धि विद्या देहु मोहि हरहु कलेश विकार

जय हनुमान् ज्ञान गुणसागर. जय कपीस तिहुलोक वुजागर... १ रामदूत अतुलित बलधामा. अँजनीपुत्र पवनसुत नामा ...२ महावीर विक्रम बजरँगी. कुमति निवारा सुमति के सँगी ...३ कँचन बरन बिराज सुवेसा. कानन कुँडल कुँचित केसा...४ हाथ बज्र औ ध्वजा विराजे. काँधे मूँज जनेवू साजे...५ सँकर सुवन केसरी नंदन. तेज प्रताप महा जगबँदन ...६ विद्यावान गुनी अति चातुर. राम काज करिबे को आतुर ...७ प्रभु चरित्र सुनिबे को रिसया. राम लखन सीता मन बिसया...८ राम लक्ष्मण जानकी जै बोलो हनुमान् की

सूक्ष्म रूप धरि सियहि दिखावा. विकट रूप धरि लॅंक जराबा...९ भीम रूप धरि असुर सँहारे. रामचंद्र के काज सँवारे...90 लाय सजीवन लखन जियाये. श्री रघुबीर हरषी वुरलाये...99 रघुपति कीन्ही बहुत बडायी. तुम मम प्रिय भरत सम भायी ...9२ सहस बदन तुम्हारो जस गावे. अस किह श्रीपति कॅंठ लगावे ...9३ सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा. नारद सारद सहित अहीसा...9४ यम कुबेर दिगपाल जहा ते. किप कोविद किह सके कहा ते...9५ तुम उपकार सुग्रीविह कीन्हा. राम मिलाय राजपद दीन्हा...9६ राम लक्ष्मण जानकी जै बोलो हनुमान् की

तुम्हारो मँत्र विभीषण माना. लँकेश्वर भये सब जग जाना...१७ युग सहस्त्र योजन पर भानू. लील्यो ताहि मधुर फल जानू...१८ प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माही. जलिध लांघि गये अचरज नाही ...१९ दुर्गम काज जगत के जेते. सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते...२० राम दुआरे तुम रखवारे. होत न अज्ञा बिनु पैसारे...२१ सब सुख लहै तुम्हारि सरना. तुम रक्षक काहू को डरना...२२ आपन तेज सम्हारो आपै. तीनो लोक हाँक ते कापै...२३ भूत पिसाच निकट नहि आवै. महावीर जब नाम सुनावै...२४ राम लक्ष्मण जानकी जै बोलो हनुमान् की

नासै रोग हरै सब पीरा. जपत निरँतर हनुमत वीरा...२५ सँकट से हनुमान् छुडावै. मन क्रम बचन ध्यान जो लावै...२६ सब पर राम तपस्वी राजा. तिन के काज सकल तुम साजा...२७ और् मनोरथ जो कोयि लावै. तासु अमित जीवन फल पावै...२८ चारो युग प्रताप तुम्हारा. है प्रसिद्ध जगत वुजियारा...२९ साधु सँत के तुम रखवारे. असुर निकँदन राम दुलारे...३० अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता. असवर दीन्ह जानकी माता...३१ राम रसायन तुम्हरे पासा. सदा रहो रघुपति के दासा(२)...३२ राम लक्ष्मण जानकी जै बोलो हनुमान् की

तुम्हरे भजन रामको भावै. जन्म जन्म के दुःख बिसरावै...३३ अँत काल रघुपतिपुर जायी. जहा जिन्म हिर भक्त कहायी...३४ और देवता चित्त न धरयी. हनुमत सेयि सर्व सुख करयी...३५ सँकट हरे मिटै सब पीडा. जो सुमिरे हनुमँत बलवीरा...३६ जे जे हनुमान् गोसायी(२). कृपा करहु गुरु देव की नायी...३७ यह शत बार पाठ कर जोयी. छुटिह बँदि महा सुख होयी...३८ जो यह पड़े हनुमान् चालीसा. होयि सिद्धि साखी गौरीसा...३९ तुळसीदास सदा हिर चेरा. कीजे नाथ हृदय मह डेरा...४० राम लक्ष्मण जानकी जे बोलो हनुमान् की

पवन तनय सँकट हरन मँगल मूरित रूप राम लखन सीता सहित हृदय बसहु सुर भूप सियावर रामचँद्र की जै पवनसुत हनुमान् की जै

श्रीराम मॅगळाशासनॅ SHRIRAAMA MANGALAASHASANAM

कौशलेंद्राय महनीय गुणाब्धये चक्रवर्ति तनुजाय सार्वभौमाय मँगळँ ...1 वेदवेदान्तवेद्याय मेघश्यामलमूर्तये पुँसाँ मोहनरूपाय पुण्यश्लोकाय मँगळँ ...2 विश्वामित्रान्तरँगाय मिथिलानगरिपतेः भ्याग्यानाँ परिपाकाय भव्यरूपाय मँगळँ ...3 पितृभक्ताय सततँ भ्रातृभिः सह सीतया नॅदिताखिललोकाय रामभद्राय मँगळ ...4 त्यक्त साकेत वासाय चित्रकृट विहारिणे सेव्याय सर्वयमिनाँ धीरोदयाय मँगळँ ...5 सौमित्रिणा च जानक्या चापबाणासिधारिणे सँसेव्यायसदा भक्तया स्वामिने मम मँगळँ ...6 दॅंडकारण्यवासाय खण्डितामरशत्रवे गृधराजाय भक्ताय मुक्तिदायास्तु मँगळँ ...7 सादरँ शबरिदत्त फलमूलाभिलाषिणे सौलभ्यपरिपूर्णाय सत्वोद्रिक्ताय मँगळँ ...8 हनुमत्समवेताय हरीशाभीष्टदायिने वालिप्रमथनयास्तु महाधीराय मँगळँ ...9 श्रीमते रघ्वीराय सेतृल्लंघितसिन्धवे जितराक्षसराजाय रणधीराय मँगळँ ...10 विभीषण कृतेप्रीत्या लँकाभीष्ट प्रदायिने सर्वलोक शरण्याय श्रीराघवाय मँगळँ ...11 आसाद्य नगरी दिव्यामभिषिक्ताय सीताय राजाधिराजाय रामचँद्राय मँगळँ ...12 ब्रह्मादिदेव सेव्याय ब्रह्मन्याय महात्मने जानकी प्राणनाथाय रघुनाथाय मँगळँ ...13 श्रीसौम्या जामातृ मूने कृपयारमान् पेयुशे महते मम नाथाय रघुनाथाय मँगळँ ...14 मँगळाशासन परैर्मदाचार्य पुरोगमैः सर्वेश्च पूर्वाचार्ये सत्कृतायास्त् मँगळँ ...15